LNMUonline.com

# Sanskrit (Hons.) Paper-II

**सभी प्रश्नों के उत्तर दें।**

1. निम्नलिखित प्रश्नक उत्तर लिखू : LNMUonline.com
(क) मेघदूत के आधार पर मेघ के मार्ग का निर्देश करें।
अथवा, मेघ के दूतत्व के औचित्य पर प्रकाश डालें।
(ख) रघुवंश के पाठ्यांश के आधार पर 'सिंह-दिलीप-संवाद' का वर्णन करें।
अथवा, राजा दिलीप द्वारा की गई 'गो-सेवा' का वर्णन करें।
(ग) 'किरातार्जुनीयम्' में वर्णित वनेचर-युधिष्ठिर-संवाद का वर्णन करें।
अथवा, युधिष्ठिर-द्रौपदी-संवाद का वर्णन करें।
2. निम्नलिखित श्लोकों में किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या करें :
(क) मन्दं मन्दं नुदति पवनश्चानुकूलो यथा त्वां, सामश्चायं नदति मधुरं चातकस्ते सगन्धः।
गर्भाधानठायपरिचयान्नूनमाबद्धमालाः सेविष्यन्ते नयनसुभगं खे भवन्तं बलाकाः।
अथवा, विश्रान्तः सन् व्रज वननदीतीरजातानि सिंचन् उद्यानानां नवजल कणैर्यूथिकाजालकानि।
गडस्वेदापनयनरुजाकलान्तकर्णोत्पलानां छायादानात्क्षणपरिचितः पुष्पलावी मुखानाम्॥
(ख) स किं सखा साधु न शास्ति योऽधिपं हितान्नां यः संश्रृणुते स किं प्रभुः।
सदानुकूलेषु हि कुर्वते रतिं नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः॥
अथवा, वसूनि वांछन्न वशी न मन्युना स्वधर्म इत्येव निवृत्तकारणः।
गुरूपदिष्टेन रिपौ सुतेऽपि वा निहन्ति दण्डेन स धर्मविप्लवम्॥
(ग) व्रताथ तेनानुचरेण धेनोः न्यषेधि शेषोऽप्यनुयायिवर्गः।
न चान्यतस्तस्य शरीररक्षा स्ववीर्यगुप्ता हि मनोः प्रसूतिः॥
अथवा, संचारपूतानि दिगन्तरणि कृत्वा दिनान्ते निसयाय गन्तुम्।
प्रचक्रमे पल्लवराजाताम्रा प्रभा पदङ्गस्य मुनेश्च धेनुः॥
3. निम्नलिखित का अनुवाद हिन्दी या अंग्रेजी में करें :
(क) त्वामासारप्रशमितवनोपप्लवं साधु मूर्ध्ना वक्ष्यत्यध्वश्रमपरिगतं सानुमानाम्रकूटः।
न क्षुद्रोऽपि प्रथम सुकृतापेक्षया संश्रयाय प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः किं पुनर्यस्तथोच्चैः।
अथवा, वक्रः पन्था यदपि भवतः प्रस्थितस्योत्तराशां सौधोत्संगप्रणयविमुखो मा स्म भूरुज्जयिन्याः।
विधुद्दामस्फुरणचकितैस्तत्र पौरांग नानां लोलापांगर्यदि न रमसे लोचनैर्विश्चितोसि॥
(ख) असक्तमाराधयतो यथायथं विभज्य भक्तया समपक्षपातया।
गुणानुरागादिव् सख्यमीयिवान् न बाधतेऽस्य त्रिगणः परस्परम्॥
अथवा, उदारकीर्तिरुदयं दयावृतः प्रशान्तबधिं दिशतोऽभिरक्षया।
स्वयं प्रदुग्धेऽस्य गुणैरुपस्तुता वसूपमानस्य वसूनि मेदिनी॥
(ग) आस्वादयदभिः कवलैस्तृणानां कण्डयनैर्दशनिवारणैश्च।
अव्याहतैः स्वैरगतैः स तस्याः सम्राट् समाराधनतत्परोऽभूत्॥
अथवा, तां देवतापित्रतिथिक्रियार्थामन्वग्ययौ मध्यम लोकपालः।
बभौ च सा तेन सतां मते न श्रद्धेव साक्षाद्विधिनोपपन्ना॥
निम्नलिखित विकल्पों में शुद्ध विकल्प का चयन करें :
(क) 'नीत्वा मासान्' में कितने मास व्यतीत किए गए थे?
(i) 6 (ii) 8 (iii) 7 (iv) 4
(ख) 'मेघालोके भवति सुखिनो .....'
यह श्लोकांश कहा अवस्थित है? LNMUonline.com
(i) पूर्वमेघ में (ii) उत्तरमेघ में (iii) किरातार्जुनीयम् में (iv) रघुवंशम् में
(ग) मेघ के निर्माण में कितने तत्व होते हैं?
(i) 5 (ii) 4 (iii) 3 (iv) 6
(घ) 'एकपत्नी' का तात्पर्य है?
(i) कुलटा (ii) प्रतिव्रता (iii) कुलघ्नी (iv) वेशवधू

LNMUonline.com

(ङ) 'किरातार्जुनीयम्' के प्रथम सर्ग में श्लोकों की संख्या है? LNMUonline.com
(i) 46 (ii) 45 (iii) 49 (iv) 51

(च) 'अर्थगौरवम्' किसकी विशेषता है?
(i) माघ की (ii) भारवि की (iii) हर्ष की (iv) दण्डी की

(छ) रघुवंश महाकाव्य में सर्गों की संख्या है?
(i) 17 (ii) 18 (iii) 19 (iv) 20

(ज) रघुवंश के द्वितीय सर्ग के श्लोकों की संख्या है?
(i) 71 (ii) 73 (iii) 75 (iv) 68

(झ) द्रौपदी-युधिष्ठिर का संवाद 'किरातार्जुनीयम्' के किस सर्ग में है?
(i) द्वितीय में (ii) प्रथम में (iii) तृतीय में (iv) चतुर्थ में

(ञ) ''व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं ....
यह श्लोकांश कहाँ अवस्थित है? LNMUonline.com
(i) शिशुपालवध में (ii) किरातार्जुनीयम् में (iii) रघुवंशम् में (iv) मेघूदतम् में

LNMUonline.com